प्रकाशन हेतु अनुमोदित

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय, बिलासपुर

एकल पीठ: माननीय श्री न्यायाधीश राधे श्याम शर्मा

दाण्डिक अपील क्रमांक 126 वर्ष 2004

अनादि विश्वास

बनाम

छत्तीसगढ़ राज्य

निर्णय

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

दिनांक 07-05-2012 के लिए सूचिबद्ध करें।

हस्ताक्षरित/-

आर.एस. शर्मा

न्यायाधीश।

<u>**छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय, बिलासपुर**</u>

--

<u>**एकल पीठ: माननीय श्री न्यायाधीश राधे श्याम शर्मा**</u>

--

<u>**दाण्डिक अपील क्रमांक 126 वर्ष 2004**</u>

<u>अपीलार्थी</u>: अनादि विश्वास, पिता अविनाश विश्वास का पुत्र, उम्र लगभग 45 वर्ष, निवासी ग्राम जवाहर नगर, पुलिस थाना बलरामपुर, जिला सरगुजा (छत्तीसगढ़)

<u>बनाम</u>

<u>प्रत्यर्थी</u> छत्तीसगढ़ राज्य

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

<u>उपस्थित</u>**:**

अपीलार्थी के लिए श्री अनंत बाजपेयी और श्री एस.एस. राजपूत, अधिवक्तागण।

राज्य/ प्रत्यर्थी की ओर से श्री संदीप यादव, उप शासकीय अधिवक्ता और श्री आर.आर. सिन्हा, पैनल अधिवक्ता।

<u>दंड प्रक्रिया संहिता की धारा **374(2)** के तहत दाण्डिक अपील</u>

<u>**निर्णय**</u>

<u>**(**दिनांक मई**, 2012** को उद्घोषित**)**</u>

यह अपील अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, एफ.टी.सी., रामानुजगंज, जिला सरगुजा द्वारा सत्र प्रकरण क्रमांक 62/ 2003 में पारित निर्णय दिनांक 22-1-2004 के विरुद्ध प्रस्तुत की गई है। आक्षेपित निर्णय द्वारा, अभियुक्त/अपीलार्थी अनादि विश्वास को निम्नलिखित तरीके से दोष सिद्ध कर दण्डित किया गया।

दोषसिद्धि	दंड
धारा 304 भाग II भ.द.स के तहत	5 वर्ष का कठोर कारावास और 10,000 रुपये का जुर्माने का भूकतान करने में व्यतिक्रम किये जाने पर, 1 वर्ष का अतिरिक्त कठोर कारावास भुगतना होगा।

2. संक्षेप में अभियोजन का मामला इस प्रकार है:

दिनांक 1-10-2002 को, सुबह लगभग 9 बजे, सपन कुमार घरमी (अभियोजन साक्ष्य-4) जतिन राय (अभियोजन साक्ष्य-8) और जगदीश (अभियोजन साक्ष्य-14) के साथ पुलिस थाना बलरामपुर गए और सूचना दी कि एक मजदूर की तलाश में वह गांव गया था। और जब वह लौट रहा था, उसने देखा कि उसके गांव का प्रदीप घासीया (अभियोजन साक्ष्य-1) मवेशी चरा रहा था। मृतक मनमत सड़क के किनारे वहीं लेटा हुआ था। पूछने पर प्रदीप घासीया (अभियोजन साक्ष्य-1) ने बताया कि मृतक और अपीलार्थी एक-दूसरे को गाली दे रहे थे और झगड़ा कर रहे थे। झगड़े के बाद, जब मृतक वापस जाने लगा, तो वह वहीं गिर गया। उसने आगे बताया कि हरेंद्र विश्वास (अभियोजन साक्ष्य-3) ने मृतक को पानी पिलाया था। मृतक के बाएं गाल पर चोट लगी थी। उपरोक्त को प्रदर्श-पी/3 के द्वारा मर्ग सूचना के रूप में अभिलिखित किया गया। अन्वेषण अधिकारी ए.एस.आई. अशोक कुजूर (अभियोजन साक्ष्य-16) घटनास्थल पर पहुंचे, पंचों को नोटिस (प्रदर्श-पी/4) दिया और मृतक के शव का मृत्यु समीक्षा (प्रदर्श-पी/5) तैयार किया। अन्वेषण अधिकारी द्वारा मौका नक्शा (प्रदर्श-पी/7) तैयार किया गया। बलरामपुर पुलिस थाना में प्रथम सूचना प्रतिवेदन (प्रदर्श-पी/12) पंजीबद्ध किया गया। मृतक के शव को परिक्षण के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बलरामपुर भेजा गया। डॉ. पी.एल. वर्मा (अभियोजन साक्ष्य-15) ने मृतक के शव का परिक्षण किया और प्रतिवेदन (प्रदर्श-पी/10 ए) दिया, जिसमें उन्होंने पाया (i) बाएं आंख पर 3"x2" का नीलगू, (ii) बाएं कंधे पर 2"x2" का नीलगू। खोपड़ी खोलने पर, उन्होंने पाया कि खोपड़ी का जोड़ एक-दूसरे से अलग हो गए थे और खोपड़ी का जोड़ से खून निकल रहा था। उन्होंने राय दी कि मृतक की मृत्यु का कारण अतिरिक्त और अंतरा कपाल रक्तस्राव के कारण मूर्च्छा था और मृत्यु मनावबद्ध प्रकृति की थी।

आगे की अन्वेषण में, अपीलार्थी का प्रकृतिकरण कथन साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत प्रदर्श-पी/1 के रूप में अभिलिखित किया गया और उसकी निशानदेही पर, टांगी, जो एक बांस में लगी हुई थी, उससे बरामद की गई और प्रदर्श-पी/2 के रूप में जब्त की गई। जब्त की गई टांगी थी

Web Copy High Court of Chhattisgarh Bilaspur

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बलरामपुर में परीक्षण के लिए भेजा गया। डॉ. पी.एल. वर्मा (अभियोजन साक्ष्य-15) ने टांगी की अन्वेषण की और प्रतिवेदन दिया (प्रदर्श-पी/11) पुलिस ने गवाहों के बयान अभिलिखित किए।

अन्वेषण पूर्ण होने के बाद, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, रामानुजगंज की न्यायालय में अपीलार्थी के खिलाफ अभियोग पत्र दायर किया गया, जिन्होंने मामले को सत्र न्यायालय, सरगुजा को अर्पित कर दिया, जहां से इसे अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, एफ.टी.सी., रामानुजगंज, जिला सरगुजा द्वारा हस्तांतरण पर प्राप्त किया गया, जिन्होंने विचारण किया और अपीलार्थी को उपरोक्त अनुसार दोषसिद्ध और दण्डित किया।

3. श्री अनंत बाजपेयी और श्री एस.एस. राजपूत, अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया कि विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने अपीलार्थी को गलत तरीके से दोषी ठहराया। प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) एक बच्चा है और सिखाया हुआ साक्षि है। उसका साक्ष्य विश्वसनीय नहीं है। निरंजन सरदार (अभियोजन साक्ष्य-2) ने अभियोजन के मामले का समर्थन नहीं किया। हरेंद्र विश्वास (अभियोजन साक्ष्य-3) ने भी अभियोजन के मामले का समर्थन नहीं किया। वह चश्मदीद साक्षि नहीं है। सपन कुमार घरमी (अभियोजन साक्ष्य-4) और अंजन (अभियोजन साक्ष्य-5) विश्वसनीय साक्षि नहीं हैं। अपीलार्थी को झूठा फंसाया गया है। अभियोजन पक्ष ने कोई ठोस और विश्वसनीय साक्ष्य पेश नहीं किया। चिकित्सा साक्ष्य के अनुसार, मृतक को उसके कंधे और बाईं आंख पर चोटें आईं। इसलिए, अपीलार्थी को भ.द.स की धारा 304 भाग II के तहत दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

4. इसके विपरीत, श्री संदीप यादव, राज्य/प्रत्यर्थी के विद्वान उप शासकीय अधिवक्ता ने उपरोक्त तर्कों का विरोध किया और विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वारा पारित आक्षेपित निर्णय का समर्थन किया।

5. मैंने पार्टियों के विद्वान अधिवक्ता को विस्तार से सुना और सत्र प्रकरण क्रमांक 62/2003 के अभिलेख का भी अवलोकन किया। अपीलार्थी की धारा 304 भाग II भ.द.स के तहत दोषसिद्धि प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1), सपन कुमार घरमी (अभियोजन साक्ष्य-4) और अंजन (अभियोजन साक्ष्य-5) के साक्ष्य पर आधारित है। प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) अपने अभिसाक्ष्य के समय 16 वर्ष का था। वह एक बाल साक्षि है।

6. बाल साक्षि एक सक्षम साक्षि होता है। बाल साक्षि की मूल मासूमियत और सच्चाई को ध्यान में रखा जाना चाहिए, हालांकि, बाल साक्षि के मामले में ट्यूशन की संभावना हमेशा मौजूद रहती है और इसे अमान्य किया जाना चाहिए। इसलिए, बाल साक्षि के साक्ष्य की मूल्यांकन करते हुए बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है, खासकर जब बाल साक्षि घटना का एकमात्र चश्मदीद साक्षि हो।

7. निवृत्ति पांडुरंगकोकाटे और अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य, (2008) 12 SCC 565 में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नानुसार अवधारित किया:

> "10. "6. साक्ष्य अधिनियम, 1872 (संक्षेप में 'साक्ष्य अधिनियम') किसी साक्षि को सक्षम मानने के लिए एक निर्धारक कारक के रूप में कोई विशेष आयु निर्धारित नहीं करता है। इसके विपरीत, साक्ष्य अधिनियम की धारा 118 यह परिकल्पना करती है कि सभी व्यक्ति गवाही देने के लिए सक्षम होंगे, जब तक कि न्यायलय यह नहीं मानती कि उन्हें उनसे पूछे गए प्रश्नों को समझने या उन प्रश्नों के तर्कसंगत उत्तर देने से रोका जाता है, क्योंकि वे कम उम्र के हैं, अत्यधिक बुढ़ापे के हैं, बीमारी के हैं चाहे वह मन की हो, या उसी तरह के किसी अन्य कारण से। एक कोमल आयु के बच्चे को गवाही देने की अनुमति दी जा सकती है यदि उसके पास प्रश्नों को समझने और उनके तर्कसंगत उत्तर देने की बौद्धिक क्षमता है।"
> यह स्थिति ब्रेवर, जे. द्वारा व्हीलर बनाम यूनाइटेड स्टेट्स, 40 एलएड 244 में संक्षेप में बताई गई थी। एक बाल साक्षि के साक्ष्य को प्रति से अस्वीकार करना

Web Copy High Court of Chhattisgarh Bilaspur

आवश्यक नहीं है, लेकिन न्यायलय विवेक के नियम के रूप में ऐसे साक्ष्य को बारीकी से अन्वेषणती है और केवल उसकी गुणवत्ता और विश्वसनीयता के बारे में आश्वस्त होने पर ही उस पर दोषसिद्धि अभिलिखित कर सकती है। (देखें सूर्यनारायण बनाम कर्नाटक राज्य, (2001) 9 SCC 129।)

7. दत्तूरामरावसखारे बनाम महाराष्ट्र राज्य, (1997) 5 SCC 341 में, यह माना गया था: (SCC पृष्ठ 343, कंडिका 5)

‘5. यदि कोई बाल साक्षि तथ्यों की गवाही देने में सक्षम पाया जाता है और विश्वसनीय है, तो ऐसे साक्ष्य दोषसिद्धि का आधार हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, शपथ के अभाव में भी साक्ष्य अधिनियम की धारा 118 के तहत एक बाल साक्षि के साक्ष्य पर विचार किया जा सकता है, बशर्ते कि ऐसा साक्षि प्रश्नों को समझने में सक्षम हो और उनके तर्कसंगत उत्तर देने में सक्षम हो। बाल साक्षि के साक्ष्य और उसकी विश्वसनीयता प्रत्येक मामले की परिस्थितियों पर निर्भर करेगी। एकमात्र सावधानी जो न्यायलय को एक बाल साक्षि के साक्ष्य का आकलन करते समय ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि साक्षि विश्वसनीय होना चाहिए और उसका व्यवहार किसी भी अन्य सक्षम साक्षि की तरह होना चाहिए और उसके सिखाए जाने की संभावना नहीं होनी चाहिए। यह निर्णय कि क्या बाल साक्षि के पास पर्याप्त बुद्धिमत्ता है, मुख्य रूप से ट्रायल जज के पास होता है,

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

जो उसके तौर-तरीकों, उसकी स्पष्ट बुद्धिमत्ता की उपस्थिति या कमी को देखता है, और उक्त न्यायाधीश उसकी क्षमता और बुद्धिमत्ता के साथ-साथ एक दायित्व की उसकी समझ को प्रकट करने के लिए किसी भी अन्वेषण का सहारा ले सकता है। निचली न्यायलय के निर्णय को हालांकि उच्च न्यायालय द्वारा बदला जा सकता है, यदि अभिलेख में संरक्षित तथ्यों से यह स्पष्ट हो कि उसका निष्कर्ष गलत था। यह सावधानी आवश्यक है क्योंकि बाल साक्षियों को सिखाया-पढ़ाकर तैयार किया जा सकता है और वे अक्सर कल्पना की दुनिया में रहते हैं। यद्यपि यह एक स्थापित सिद्धांत है कि बाल साक्षि खतरनाक साक्षि होते हैं क्योंकि वे आसानी से प्रभावित हो सकते हैं, ढाले जा सकते हैं और गढ़े जा सकते हैं, लेकिन यह भी एक स्वीकृत मानदंड है कि यदि उनके साक्ष्य की सावधानीपूर्वक अन्वेषण के बाद न्यायलय इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि उसमें सच्चाई की छाप है, तो बाल साक्षि के साक्ष्य को स्वीकार करने में कोई बाधा नहीं है।"

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

उपरोक्त सिद्धांत को रतनसिंहदलसुखभाई नायक बनाम गुजरात राज्य, (2004) 1 SCC 64, SCC pp. 67-68, कंडिका 6-7 में स्पष्ट किया गया था। किसी भी दृष्टिकोण से अधीनस्थ न्यायलय और उच्च न्यायालय के निर्णय हस्तक्षेप की आवश्यकता वाली किसी भी दोष से ग्रस्त नहीं हैं।"

8. प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) पक्षदेहि हो गया और उसने अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन नहीं किया, लेकिन उसके साक्ष्य को पूरी तरह से अमान्य नहीं किया गया है। उसके साक्ष्य पर कम से कम उस हद तक भरोसा किया जा सकता है जहाँ तक उसने अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन किया।

9. प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) ने अभिसाक्ष्य दिया कि घटना की तारीख को, लगभग 7 बजे सुबह, अपीलार्थी और मृतक आपस में झगड़ रहे थे। मृतक अपीलार्थी से कह रहा था कि अपीलार्थी ने अपने मकई को मवेशियों से चरवा दिया था। उसने यह भी अभिसाक्ष्य दिया कि मृतक रास्ते में गिर गया। उसने आगे अभिसाक्ष्य दिया कि यह सच है कि अपीलार्थी और मृतक आपस में झगड़ते हुए जा रहे थे।

10. हरेंद्र विश्वास (अभियोजन साक्ष्य-3) ने अभिसाक्ष्य दिया कि वह एक मजदूर को काम पर रखने के बाद अपने घर आ रहा था। रास्ते में, उसने देखा कि अपीलार्थी और मृतक एक-दूसरे से झगड़ा कर रहे थे। प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) उसे रास्ते में मिला। उसने उसे बताया कि मृतक गिर गया था। वह मृतक के पास गया और उसके मुंह में पानी डाला। पानी डालने के बाद, मृतक की मृत्यु हो गई। प्रतिपरीक्षण की कंडिका-3 में, उसने अभिसाक्ष्य दिया कि यह कहना गलत है कि उसने अपीलार्थी को मृतक के साथ मारपीट करते हुए नहीं देखा।

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

11. सपन कुमार घरमी (अभियोजन साक्ष्य-4) ने अभिसाक्ष्य दिया कि वह मजदूर लगाने गया था और वापस आ रहा था। उसने देखा कि अपीलार्थी मृतक को भगा रहा था, उसे लाठी से मार रहा था। मृतक गिर गया। उस समय, प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) भी वहां आया और बताया कि अपीलार्थी ने मृतक पर हमला किया जिसके कारण मृतक गिर गया।

12. अंजन (अभियोजन साक्ष्य-5) ने अभिसाक्ष्य दिया कि घटना की तारीख को, सुबह लगभग 7 बजे, वह, सपन कुमार घरमी (अभियोजन साक्ष्य-4), लालसू, चीपा और चिहू अपने घर के सामने सड़क पर बैठे थे। कुछ देर बाद, उसने देखा कि अपीलार्थी मृतक को भगा रहा था और उसे लाठी से मार रहा था। मृतक गिर गया और मर गया। मृतक को बाईं गाल पर आंख के पास चोट लगी थी।

13. मर्ग सुचना (प्रदर्श-पी/3) सपन कुमार घरमी (अभियोजन साक्ष्य-4) द्वारा अभिलिखित कराई गई थी। प्रदर्श-पी/3 में, अपीलार्थी का नाम हमलावर के रूप में उल्लेखित है। मृत्यु

समीक्षा (प्रदर्श-पी/5) में भी, अपीलार्थी का नाम हमलावर के रूप में उल्लेखित है। प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) हालांकि पक्षद्रोही हो गया था और अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन नहीं किया था, फिर भी उसने विशेष रूप से अभिसाक्ष्य दिया कि मृतक और अपीलार्थी मक्का चराने के विषय पर झगड़ रहे थे। कुछ देर बाद मृतक गिर गया।

14. सपन कुमार घरमी (अभियोजन साक्ष्य-4) और हरेंद्र विश्वास (अभियोजन साक्ष्य-3) ने विशेष रूप से अभिसाक्ष्य दिया कि प्रदीप घसिया (अभियोजन साक्ष्य-1) ने उन्हें बताया था कि मृतक और अपीलार्थी झगड़ रहे थे। उसने यह भी बताया कि मृतक गिर गया था। हरेंद्र विश्वास (अभियोजन साक्ष्य-3) ने विशेष रूप से अभिसाक्ष्य दिया कि उसने मृतक के मुंह में पानी डाला था। अंजन (अभियोजन साक्ष्य-5) ने भी अभिसाक्ष्य दिया कि उसने घटना देखी थी। उसने यह भी देखा कि मृतक को बाईं गाल पर आंख के पास चोट लगी थी। डॉ. पी.एल. वर्मा (अभियोजन साक्ष्य-15), जिन्होंने मृतक के शव का परिक्षण किया था, ने अभिसाक्ष्य दिया कि शवपरिक्षण में उन्होंने (i) बाईं आंख पर 3"x2" का नील, (ii) बाएं कंधे पर 2"x2" का नील। खोपड़ी खोलने पर, उन्होंने पाया कि टांके एक-दूसरे से अलग हो गए थे और टांकों से खून निकल रहा था।

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

15. मैंने उपरोक्त अभियोजन गवाहों के साक्ष्य का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से अभिसाक्ष्य दिया कि भाग्यशाली दिन पर, अपीलार्थी ने लाठी से मृतक पर हमला किया था। चिकित्सा साक्ष्य से, मुझे पता चलता है कि मृतक की मृत्यु का कारण अतिरिक्त और अंतःकपालीय रक्तस्राव के कारण बेहोशी था और मृत्यु मानववध प्रकृति की थी।

16. विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने आक्षेपित निर्णय की कंडिका 24 में निष्कर्ष दिया कि अपीलार्थी और मृतक के बीच झगड़ा हुआ था। अपीलार्थी और मृतक के बीच मक्का चराने के विषय पर विवाद था। इस कारण, अपीलार्थी ने टांगी के भोथरे हिस्से से दो वार किए। इसमें कोई पूर्वचिन्तन नहीं था। घटना अचानक आवेश में और अचानक झगड़े के दौरान हुई और अपीलार्थी ने गुस्से में हमला किया। विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने अपीलार्थी को भारतीय दंड संहिता की धारा 304 भाग II के तहत अपराध का दोषी पाया।

17. उपरोक्त चर्चा से, मैं पाता हूँ कि विद्वान विचारण न्यायाधीश ने अपीलार्थी को भारतीय दंड संहिता की धारा 304 भाग II के तहत दोषी ठहराने का निष्कर्ष सही है और उसके द्वारा अपीलार्थी को 10,000/- रुपये के जुर्माने के भुगतान के साथ 5 वर्ष के कठोर कारावास की सजा न्यायोचित और उचित है। इसलिए, दोषसिद्धि और दंड के आक्षेपित निर्णय में इस न्यायालय द्वारा किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। अपीलार्थी उसके द्वारा पहले ही भुगताई गई अवधि को उसे दी गई उपरोक्त सजा के विरुद्ध समायोजित करने का हकदार होगा। आक्षेपित निर्णय के प्रतिकर वाले हिस्से को बरकरार रखा जाता है।

18. परिणामस्वरूप, अपील विफल होती है और तदनुसार अमान्य की जाती है।

हस्ताक्षरित/-

आर.एस. शर्मा

न्यायाधीश

Web Copy
High Court of Chhattisgarh
Bilaspur

अस्वीकरण: हिन्दी भाषा में निर्णय का अनुवाद पक्षकारों के सीमित प्रयोग हेतु किया गया है ताकि वो अपनी भाषा में इसे समझ सकें एवं यह किसी अन्य प्रयोजन हेतु प्रयोग नहीं किया जाएगा । समस्त कार्यालयीन एवं व्यवहारिक प्रयोजनों हेतु **निर्णय का अंग्रेजी स्वरुप ही अभिप्रमाणित माना जाएगा और कार्यान्वयन तथा लागू किए जाने हेतु उसे ही वरीयता दी जाएगी।**

Translated By : Priti Rout